

Hans-Jörg Ronsdorf

क्रूस का
हमसे क्या संबंध है

सरल।
स्पष्ट।

यीशु को
क्यों
मरना पड़ा?

यीशु को क्यों मरना पड़ा?

क्रूस का हमसे क्या संबंध है

Hans-Jörg Ronsdorf

पहला संस्करण अक्टूबर 2026, जुल्सबर्ग (Sulzberg)
सर्वाधिकार सुरक्षित
आवरण-सज्जा: क्रिस्टीने रॉन्सडॉर्फ (Christine Ronsdorf)
बाइबल के वचन स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत
ऑर्डर, प्रश्न, संपर्क: hj-ronsdorf@t-online.de

परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम को इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह **हमारे लिए मरा।**

रोमियों 5:8

यह छोटी पुस्तक केवल एक प्रश्न की खोज करती है: दो हजार वर्ष पहले एक मनुष्य की मृत्यु आज मेरी सहायता क्यों करे? यह उन पाठकों के लिए लिखी गई है जिनका कलीसिया से बहुत कम संबंध है। कदम-दर-कदम, सरल शब्दों में।

विषय-सूची

1 एक सरल प्रश्न	6
2 हमारे साथ क्या ठीक नहीं है	8
3 परमेश्वर वास्तव में कैसा है	11
4 लहू क्यों?	14
5 यीशु ने स्वयं क्या कहा	16
6 तीन कठिन वाक्य	18
7 उसकी मृत्यु हमें कैसे बचाती है	21
8 ईस्टर क्यों इसका हिस्सा है	24
9 शुभ संदेश	26

1 एक सरल प्रश्न

दो हज़ार वर्ष पहले एक मनुष्य को मृत्युदंड दिया गया। नगर के बाहर, नगर की दीवारों के बाहर। लकड़ी के एक खंभे पर, लकड़ी के एक क्रूस पर। जिज्ञासु दर्शकों के सामने, जो हिंसा के आदी थे। उस समय बहुत से लोग ऐसे ही मरते थे। रोमियों ने हज़ारों को मारा, बहुतों को क्रूस पर चढ़ाया। अर्थहीन मौतें।

इस एक मनुष्य के बारे में मसीही आज तक एक विचित्र वाक्य कहते हैं। वह हमारे लिए मरा। इसका क्या अर्थ है: हमारे लिए? इस एक मृत्यु में ऐसा क्या अलग है?

ऐसे लोग थे और हैं, जो दूसरों के लिए मरते हैं। जब वे दूसरों को केवल इसी तरह मृत्यु से बचा सकते हैं। अपने आप को दूसरों के लिए दे देने से बड़ा कुछ नहीं किया जा सकता। ताकि वे जीवित रह सकें।

पहले, जब टीके नहीं थे, बच्चे डिप्थीरिया से दम घुटकर मर जाते थे। एक चिपचिपी परत उनका गला बंद कर देती थी। कभी-कभी केवल एक ही उपाय काम आता था। डॉक्टर एक छोटी नली डालता और अपने ही मुँह से उस परत को चूसकर बाहर निकालता। बच्चे को फिर से साँस आने लगती। पर अब बीमारी डॉक्टर के भीतर थी। कुछ इससे मर गए।

डॉक्टर ने केवल सहायता ही नहीं की। जो चीज़ बच्चे को मार रही थी, उसे उसने अपने भीतर ले लिया। बीमारी बच्चे से निकलकर डॉक्टर में चली गई।

ठीक यहीं प्रश्न शुरू होता है। यदि यीशु हमारे लिए मरा: तो उसने हमें किससे बचाया? यदि हम इस चित्र को अपने ऊपर लागू करें, तो बीमारी क्या थी और कहाँ थी?

अधिकतर लोगों को कोई बीमारी महसूस ही नहीं होती। वे जीते हैं, काम करते हैं, प्रेम करते हैं, अपना सबसे अच्छा करते हैं। बीमारी? कहाँ? और यदि कोई है भी, तो दो हज़ार वर्ष पहले एक मनुष्य की मृत्यु उसे क्यों चंगा करे? एक मनुष्य यरूशलेम में मरा। मैं यहाँ जीता हूँ।

उसके क्रूस का मुझसे क्या संबंध है? यह कोई भोला प्रश्न नहीं है। यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है जो मसीहियत से पूछा जा सकता है। इस छोटी पुस्तक में मैं इसके सिवा और कुछ नहीं करना चाहता कि इस एक प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करूँ। कदम-दर-कदम। पहले: हम किस बात से पीड़ित हैं? फिर: वह कौन है, जो इसे हमसे दूर ले जाता है? फिर: उसके साथ क्या होता है? और अंत में: यह मुझ तक कैसे पहुँचता है?

पहले मसीहियों में से एक ने इस वाक्य को एक बार और ठीक से कहा। उसने लिखा कि यीशु ने हमारे दोष को अपनी ही देह पर उठा लिया, वहाँ काठ पर, क्रूस पर। और उसके घावों से हम चंगे हुए।¹

1. 1 पतरस 2:24

इस वाक्य के तीन शब्द याद रखिए:

उठा लिया। देह। चंगे।

ये हमें थोड़ी देर व्यस्त रखेंगे।

2 हमारे साथ क्या ठीक नहीं है

मैं परमेश्वर से शुरू नहीं करता।

बात हमारी है।

हम में से कोई यह नहीं चुन सका कि किसने हमें जन्म दिया और हम कहाँ पैदा हुए। जीवन ने हमें किन परिस्थितियों में डाला, यह हमारा निर्णय नहीं था। हम आज कहाँ खड़े हैं, यह भी अधिकतर हमने तय नहीं किया।

अब बात किसी शारीरिक बीमारी की नहीं रही, जैसी अध्याय 1 के बच्चे की थी। बात एक ऐसी बीमारी की है जिसे छुआ नहीं जा सकता, और इसकी कि वह कैसे महसूस होती है: खालीपन, अर्थहीनता, दोष का भाव, टूटापन, निराशा कि कोई रास्ता नहीं, बंधन, आशाहीनता। यह सब कोई महसूस नहीं करना चाहता। जो ईमानदारी से रुककर देखे, वह ऐसी और इसी तरह की भावनाओं को पहचान सकता है।

अक्सर वे किसी शांत क्षण में आती हैं। रात को, जब आपको नींद नहीं आती। किसी कब्र के पास। या जब कोई व्यक्ति आपसे बात करना बंद कर देता है। तब कुछ ऐसा होता है जिसे आप हटा नहीं सकते।

हर मनुष्य के पास कुछ ऐसा है जिसे वह अब ठीक नहीं कर सकता। एक शब्द, जो मुँह से निकल गया। एक दरवाज़ा, जो ज़ोर से बंद कर दिया गया। एक व्यक्ति, जो आपके मेल-मिलाप से पहले ही मर गया। एक धोखा, जिसे किसी ने नहीं पकड़ा, पर जिसे आप स्वयं कभी नहीं भूलते।

आप बहुत कुछ कर सकते हैं। आप इसे मान सकते हैं। आप क्षमा माँग सकते हैं। जहाँ संभव हो, आप हानि की भरपाई कर सकते हैं। आप ठान सकते हैं कि ऐसा फिर कभी नहीं करेंगे।

मान लेना बहुत देर से आता है। क्षमा-याचना अब दूसरे तक नहीं पहुँचती। हानि की भरपाई नहीं हो सकती, क्योंकि उसके लिए कोई धन नहीं है। या क्योंकि यह संभव ही नहीं है। और संकल्प केवल अगली बार तक टिकता है।

और यदि सब कुछ सफल भी हो जाए, तो भी कुछ बचा रहता है। बात हो चुकी है। वह संसार में खड़ी है। कोई भरपाई उसे अनुहुआ नहीं कर सकती।

यहाँ तक हमने केवल अपने आप पर, मनुष्यों पर देखा है। क्या हो, यदि परमेश्वर हमारा सृष्टिकर्ता है? संसार को हमने नहीं बनाया। प्रकृति के नियमों को भी नहीं। उन नियमों या शर्तों को भी नहीं, कि हम दोष के साथ कैसे निपट सकते हैं या उससे सचमुच कैसे छुटकारा पाते हैं। यह परमेश्वर का संसार है, जिसमें हम जन्मे हैं। चाहे हम ऐसा समझें भी: नियम हम तय नहीं करते।

जो कुछ मैंने ऊपर बताया, उसकी तुलना हम एक घातक बीमारी से कर सकते हैं। बाइबल के पास इसके लिए एक छोटा-सा शब्द है: पाप।

पाप शब्द घिस गया है। बहुत से लोग इसमें केवल नैतिक उपदेश और उठी हुई उँगली सुनते हैं। पर इसका अर्थ जीवन के बहुत निकट की बात है। बाइबल जिस शब्द का प्रयोग करती है, उसका शाब्दिक अर्थ है: लक्ष्य से चूक जाना। एक तीर की तरह, जो निशाने से हट जाता है।

तो पाप का अर्थ है: मैं वह नहीं हूँ, जो मुझे होना चाहिए था। और मैंने वह किया है, जो नहीं होना चाहिए था। दोनों बातें साथ-साथ हैं। इसका अर्थ कर्म हैं। उन्हें गिना जा सकता है। और इसका अर्थ हमारे स्वभाव का वह भाग भी है, जहाँ से ये कर्म आते हैं। उसे गिना नहीं जा सकता। पर हर कोई उसे जानता है। आप कुछ करने का निश्चय करते हैं, और फिर कुछ और कर बैठते हैं। मानो कोई शक्ति हो, जो हमें चलाती है। भीतर से और बाहर से भी।

अब एक वाक्य आता है, जिसे सुनना कठिन है। यह सब पर लागू होता है। मुझ पर भी।

बाइबल इसे ऐसे कहती है: सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा के अनुरूप नहीं हैं।² इसका अर्थ है: कोई भी वह नहीं है या नहीं बनता, जिसके लिए परमेश्वर ने उसे मूल रूप से बनाया था।

मैं किसी पर दोष नहीं लगाता, किसी पर आरोप नहीं लगाता। अंत में हर मनुष्य अपने ही सामने खड़ा होता है। अपने आप से भागना कभी न कभी समाप्त हो जाता है। अच्छा है कि रुककर ईमानदार हों: क्या बंधन, खालीपन, अर्थहीनता, दोष, अकेलापन, दूटापन, हिंसा, अपराध हैं? वे बुखार की तरह हैं। पर बुखार बीमारी नहीं है। वह दिखाता है कि कोई बीमारी है, कि कुछ ठीक नहीं है।

इसके पीछे बीमारी छिपी है। वह शोर नहीं करती। वह चुपचाप काम करती है। और कोई ऐसी सीढ़ी नहीं है, जिस पर आप उससे बच निकलें। क्योंकि दोष केवल दूसरों में या मुझसे बाहर नहीं है। वह मुझ में बैठा है। मेरे जीवन में, मेरे इतिहास में, उसमें जो मैं हूँ।

एक दार्शनिक ने एक बार हमारे विवेक को एक अदालत कहा। उसमें तीन आवाज़ें हैं: एक अभियोक्ता, एक बचाव पक्ष का वकील और एक न्यायाधीश। तीनों हमारे भीतर बोलते हैं। अभियोक्ता गिनाता है कि हमने क्या किया है। बचाव पक्ष का वकील बहाने खोजता है। और न्यायाधीश एक ऐसा निर्णय सुनाता है, जिससे हम बच नहीं सकते। यह अदालत हमें किसी को समझानी नहीं पड़ती। हम इसे अपने साथ लिए फिरते हैं।

इसलिए केवल एक शब्द पर्याप्त नहीं है। जब कोई मुझसे कहता है: छोड़ो, भूल जाओ, तो यह मित्रतापूर्ण है। पर यह मुझे दूसरा मनुष्य नहीं बना देता। और यह जो हो चुका उसे अनहुआ नहीं कर देता। कोई डॉक्टर किसी बच्चे को यह कहकर चंगा नहीं करता: इतना बुरा नहीं है।

तो हमें दो बातों की आवश्यकता है। कि हमें क्षमा किया जाए। और कि जो हमारे भीतर बैठा है, वह बाहर निकले और उसका अंत हो। एक के बिना दूसरी सहायता नहीं करती।

3 परमेश्वर वास्तव में कैसा है

हम परमेश्वर के बिना इस स्थिति से बाहर नहीं निकल सकते। परमेश्वर के बिना हमारे अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। चाहे हम इस पर विश्वास करें या न करें।

पहले एक गलतफहमी।

लगभग हर किसी के मन में परमेश्वर की एक तस्वीर है। उसके मन में भी, जो विश्वास नहीं करता। अक्सर यह एक कठोर निगरानी करने वाले की तस्वीर होती है। एक ऐसा, जो सब कुछ देखता है और कुछ नहीं भूलता। कुछ लोगों ने बचपन में यही सीखा: प्यारा परमेश्वर सब कुछ देखता है। यह सांत्वना जैसा नहीं लगता था। यह चौकसी जैसा लगता था।

यदि इसे यीशु के क्रूस पर लागू करें, तो यह ऐसा लगता है: परमेश्वर दंड चाहता है। यीशु बीच में कूद पड़ा, ताकि दंड उस पर पड़े, हम पर नहीं। पुत्र ने क्रोधित पिता को शांत किया।

बहुतों ने इसे ऐसे ही सुना है, कलीसियाओं में भी। कुछ इसी कारण चले गए। कौन ऐसे परमेश्वर पर भरोसा करना चाहेगा, जिसे मित्रतापूर्ण होने से पहले लहू देखना पड़े?

इसमें कुछ बात सच है। परमेश्वर देखता है कि हम क्या करते हैं। और वह किसी बात को यों ही नहीं मिटा देता। पर बाकी सही नहीं है। जो इस तस्वीर से शुरू करता है, वह अंत में सब कुछ गलत समझता है। यह तस्वीर एक विकृत तस्वीर है। कम से कम एक अधूरी तस्वीर।

क्या हो, यदि परमेश्वर बिल्कुल अलग है? आइए देखें कि बाइबल में पहला कदम कौन उठाता है। वह कभी मनुष्य नहीं होता। वह हमेशा परमेश्वर होता है। वह वाटिका में आदम को खोजता है, जब वह छिप गया था। वह अब्राहम को बुलाता है। वह अपनी प्रजा को मिस्र की दासता से निकाल लाता है, इससे पहले कि वह उसे एक भी आज्ञा दे। और अंत में वह अपने पुत्र को भेजता है।

बाइबल के सबसे प्रसिद्ध वाक्यों में से एक इसे ऐसे कहता है: परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने अपना पुत्र दे दिया।³

पुत्र ने पिता से प्रेम छीनकर नहीं लिया। पिता ने पुत्र को दिया, क्योंकि वह प्रेम करता था। ठीक वैसे ही जैसे अध्याय 1 का डॉक्टर आया, क्योंकि वह सहायता करना चाहता था। इसलिए नहीं कि किसी ने उसे मना लिया था।

3. यूहन्ना 3:16

तो परमेश्वर उसके साथ कैसे व्यवहार करता है, जो हमने दूसरों के साथ और इस प्रकार उसके साथ किया है? आइए फिर अपने आप से शुरू करें। कल्पना कीजिए कि किसी ने आपको चोट पहुँचाई है। गहरी चोट। आपके पास दो विकल्प हैं। आप उससे बदला ले सकते हैं। या आप क्षमा कर सकते हैं।

क्षमा करने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह नहीं कि चोट चली गई। इसका अर्थ है कि आप हानि को स्वयं उठाते हैं, बजाय इसके कि उसे दूसरे को लौटा दें। जो क्षमा करता है, वह चुकाता है। हमेशा। यही क्षमा की कीमत है। और इसे दोषी नहीं चुकाता, बल्कि वह जो क्षमा करता है।

यह मनुष्यों के बीच का अनुभव है। और परमेश्वर के यहाँ? पुराने नियम में, बाइबल के पहले भाग में, वह अपनी प्रजा से कहता है:

तूने अपने पापों से मुझे परिश्रम में डाला है। मैं, मैं ही वह हूँ जो अपने निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूँ।⁴

दोनों बातें साथ-साथ खड़ी हैं। पाप परमेश्वर को परिश्रम में डालता है। वह उसे उठाता है। और वह उसे मिटा देता है। इसलिए नहीं कि हम इसके योग्य थे। बल्कि इसलिए कि वह ऐसा ही है। वह न्यायाधीश नहीं, जो किसी भूल की ताक में बैठा हो। बल्कि वह, जो बोझ को पहले से उठा रहा है, बहुत पहले, इससे पहले कि हम ध्यान दें कि हमने उसे उस पर लाद दिया है।

पर यह केवल आधी बात है। परमेश्वर ऐसा व्यवहार नहीं करता मानो कुछ हुआ ही न हो। एक परमेश्वर, जो हर बात को अनदेखा कर दे, भला परमेश्वर न होता। वह उदासीन होता। जब किसी बच्चे के साथ अन्याय होता है, तो हम अपेक्षा करते हैं कि कोई इसे गंभीरता से ले। परमेश्वर इसे गंभीरता से लेता है। सब कुछ। जो अन्याय मैंने किया है, उसे उतनी ही गंभीरता से जितना उस अन्याय को, जो मेरे साथ हुआ।

बात यह है कि क्या परमेश्वर पाप को उठाने और सहने में धर्मी है, निष्पक्ष और सुसंगत। क्या वह सब कुछ, जो बीत गया, जो अभी है और जो आने वाला है, ठीक कर देगा? इसका संबंध सब से और हर एक से होगा। क्या हमारी विफलता से – हमारे पाप से – हुई हानि कभी ठीक की जा सकती है? एक अकल्पनीय बात, जो शायद केवल एक अकल्पनीय आश्चर्यकर्म से ही हो सकती है।⁵

यह सब मिलकर हमें क्रूस तक ले जाता है। एक परमेश्वर, जो केवल कठोर होता, उसे किसी क्रूस की आवश्यकता न होती। वह बस दंड दे सकता था और बदला चुका सकता था। एक परमेश्वर, जो केवल नरम होता, उसे भी क्रूस की आवश्यकता न होती। वह अनदेखा कर सकता था। यह भी उतना ही दुखद होता। पर परमेश्वर दोनों है। वह दोष को गंभीरता से लेता है। और वह दोषी से पूरा प्रेम करता है। ऐसा परमेश्वर एक ऐसा मार्ग चलता है, जिस पर दोनों बातें सच बनी रहती हैं। इसमें वह दुविधा में नहीं फँसा है। वह प्रेम है, और जो वह करता है, वह प्रेम है। यह एक ऐसा प्रेम है जो धर्मी और पवित्र है।

4. यशायाह 43:24-25

5. रोमियों 3:25-26

कूँस यही मार्ग है। और यह उसका मार्ग है। हमारा नहीं।

4 लहू क्यों?

क़ूस एक लहूलुहान घटना थी। और लहू से हम बचकर नहीं निकल सकते। चाहे यह अजीब लगे। कम से कम हमारे क्षेत्रों में।

रोज़मर्रा के जीवन में लहू से हमारा सामना कम ही होता है। किसी चोट में। डॉक्टर के पास, जब वह खून निकालता है। या रक्तदान में। वहाँ हम कुछ ऐसा सीखते हैं, जिसे हम अन्यथा आसानी से भूल जाते हैं: लहू जीवन बचा सकता है। एक का लहू दूसरे को जीवित रखता है।

जो पहली बार किसी आराधना सभा में जाता है, वह शायद यीशु के लहू के बारे में कोई गीत सुनता है। और आश्चर्य करता है। या घिन खाता है। मसीहियत लहू के बिना क्यों नहीं चल सकती? क्षमा का एक शब्द पर्याप्त क्यों नहीं है?

आइए फिर अपने आप से शुरू करें। एक छोटा लड़का अपनी माँ के सफ़ेद मेज़पोश पर फ़ेल्ट-पेन से चित्र बनाता है। वह भीतर आती है और देखती है। और वह उसे क्षमा कर देती है। तुरंत, बिना किसी उलाहने के। पर मेज़पोश फिर भी रंगीन है। क्षमा उसे साफ़ नहीं करती। किसी को उसे धोना होगा। और जो उसे धोता है, वह लड़का नहीं है।

यही क्षमा और शुद्धि के बीच का अंतर है। क्षमा कहती है: मैं इसे तेरे विरुद्ध नहीं गिनता। शुद्धि कहती है: यह चला गया। हमें दोनों की आवश्यकता है। अध्याय 2 में हमने देखा कि पाप हमारे भीतर बैठा है, एक बीमारी की तरह। इसलिए हमें केवल ऐसे किसी की आवश्यकता नहीं, जो कहे: छोड़ो, भूल जाओ। हमें ऐसे किसी की आवश्यकता है, जो चंगा करे।

और परमेश्वर के यहाँ? उसने यह अपनी प्रजा इस्राएल को यीशु से बहुत पहले सिखाया। एक ऐसी भाषा में, जो हमारे लिए अजनबी है। उस समय हर कोई उसे समझता था। यह बलिदानों की भाषा है।

एक इस्राएली, जिस पर दोष आ गया था, एक पशु को पवित्रस्थान पर लाता था, उस स्थान पर जहाँ परमेश्वर वास करता था। वह अपना हाथ पशु के सिर पर रखता था। इसका अर्थ था: यह पशु अब मेरे स्थान पर है। फिर उसे बलि किया जाता था। याजक लहू लेता और उसे वेदी पर ले जाता था। लहू मुख्य बात था। मारना नहीं। लहू।

क्यों? क्योंकि बाइबल में लहू जीवन का प्रतीक है। मूसा की व्यवस्था में परमेश्वर कहता है:

जीवन लहू में है, और मैंने उसे वेदी पर तुम्हें दिया है, ताकि वह तुम्हें ढाँप ले।⁶

6. लैव्यव्यवस्था 17:11

इस वाक्य में बहुत कुछ है। परमेश्वर लहू देता है। वह उसे ऐसे नहीं माँगता जैसे कोई लेनदार अपना पैसा। वह उसे ऐसे देता है जैसे कोई डॉक्टर दवा देता है। और लहू जो करता है, उसे कहते हैं: ढाँपना। वह दोष के ऊपर बिछ जाता है। और साथ ही उसे दूर कर देता है।

यह अजनबी भाषा क्या कहती है? तीन बातें:

दोष गंभीर है।

उसकी कीमत एक जीवन है।

और यह जीवन परमेश्वर देता है।

पर पशु केवल एक चित्र थे। एक भेड़ नहीं जानती कि वह किसलिए मरती है। वह कुछ भी अपने ऊपर नहीं ले सकती, क्योंकि वह कुछ नहीं समझती। बाइबल स्वयं कहती है कि पशुओं का लहू दोष को दूर नहीं कर सकता।⁷ यह एक प्रकार की शिक्षा थी। इसके द्वारा परमेश्वर घोषणा कर रहा था कि वह एक दिन सचमुच क्या करेगा।

और फिर उसने ऐसा किया। किसी पशु के साथ नहीं। एक ऐसे मनुष्य के साथ, जो जानता था कि वह क्या कर रहा है। जो यह चाहता था। वह, जो परमेश्वर का अपना पुत्र था। यहाँ परमेश्वर ने पराया लहू नहीं लिया। उसने अपना लहू दिया।

इसलिए लहू। इसलिए नहीं कि परमेश्वर लहू देखना चाहता है। बल्कि इसलिए कि दोष की कीमत एक जीवन है। और इसलिए कि परमेश्वर ने निश्चय किया कि वह उसका अपना जीवन हो। इस कार्य में पिता और पुत्र पूरी तरह एक हैं।

7. इब्रानियों 10:4

5 यीशु ने स्वयं क्या कहा

और स्वयं यीशु? क्या वह जानता था कि उस पर क्या आने वाला है?

जब कोई व्यक्ति जल्दी मर जाता है, तो जो पीछे रह जाते हैं, वे अक्सर पूछते हैं: क्या उसे इसका आभास था? क्या उसने कुछ कहा था, जिसे हम अब जाकर समझते हैं? कभी-कभी कोई पत्र मिल जाता है। या किसी वाक्य की याद आती है, जिस पर उस समय ध्यान नहीं दिया गया था।

यीशु के मामले में एक और संदेह मन में आता है: कि उसकी मृत्यु को अर्थ बाद में दिया गया। एक प्रचारक हृदय से आगे बढ़ गया। सत्ता वालों ने उसे रास्ते से हटा दिया। और उसके मित्रों ने बाद में उस अर्थहीन मृत्यु में अर्थ खोजा। ऐसा होता है। लोग शोक में ऐसा करते हैं।

वृत्तांत कुछ और कहते हैं। यीशु ने अपनी मृत्यु के बारे में उसके आने से पहले ही बात की। कई बार। और उसने स्वयं उसे ठीक वही छुड़ाने वाला अर्थ दिया।

तीन बार उसने अपने मित्रों से कहा कि वह यरूशलेम जाएगा और वहाँ उसे मरना होगा। होगा। वे यह सुनना नहीं चाहते थे। उनमें से एक, पतरस, ने उसका कड़ा विरोध किया। यीशु अपनी बात पर बना रहा।

एक बार उसने स्वयं को डॉक्टर कहा। उस पर आरोप लगाया गया कि वह घृणित कर वसूलने वालों और बुरे नाम वाले दूसरे लोगों के साथ भोजन करने बैठता है। उसने उत्तर दिया:

वैद्य की आवश्यकता भले-चंगों को नहीं, परन्तु बीमारों को होती है।⁸

वह जानता था कि वह किसके पास आया है। और उसने यह भी कहा कि किसलिए:

मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा की जाए, बल्कि इसलिए कि सेवा करे और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना जीवन दे।⁹

मनुष्य का पुत्र, यीशु अपने आप को यही कहता था। छुड़ौती, वह धन है जो किसी बंदी को छुड़ाता है। बंदीगृह से, दासता से। कर्ज़ में डूबे जीवन से। यीशु कहता है: मेरा जीवन कीमत है। और तुम वे हो, जो स्वतंत्र होते हो।

अंतिम शाम उसने अपने मित्रों के साथ फसल का भोजन खाया। इस पर्व में इस्राएल आज तक मिस्र से छुटकारे को याद करता है। उसने रोटी ली, तोड़ी और कहा: यह मेरी देह है, तुम्हारे लिए। उसने दाखरस का कटोरा लिया और कहा: यह मेरा लहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।¹⁰

8. मरकुस 2:17

9. मरकुस 10:45

10. लूका 22:19; मत्ती 26:28

वे इसे समझ नहीं पाए। बाद में ही समझे। पर उसने यह होने से पहले कह दिया था। वह जानता था कि वह मरेगा। वह जानता था कि किसके लिए। और वह जानता था कि किसलिए।

फिर जैतून पहाड़ के तल पर गतसमनी की वाटिका वाली रात आई। वहाँ हम देखते हैं कि इसकी उसे क्या कीमत चुकानी पड़ी। वह अपने तीन मित्रों को साथ ले गया। उसने उनसे कहा कि उसका मन इतना उदास है कि वह मरने पर है। फिर वह भूमि पर गिर पड़ा और प्रार्थना की:

हे पिता, तुझसे सब कुछ हो सकता है। यह कटोरा मुझसे हटा ले। तौभी जो मैं चाहता हूँ वह नहीं, पर जो तू चाहता है।¹¹

कटोरा एक पुराना चित्र है। इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं के यहाँ कटोरा वह है, जो परमेश्वर किसी मनुष्य को पीने के लिए देता है। उसका भाग। उसकी नियति। कभी-कभी वह आशीष है। कभी-कभी वह सबसे भारी चीज़ है, जो किसी मनुष्य के हिस्से में आ सकती है। यीशु ने देखा कि उसके कटोरे में क्या था। उसने विनती की कि वह उससे टल जाए। और फिर उसने उसे पी लिया।

तो वह ठोकर खाकर अपनी मृत्यु में नहीं जा गिरा। उसने देखा कि क्या आने वाला है। उसने विनती की कि उसे बरखा दिया जाए। और फिर भी वह गया। इस पर हम अध्याय 7 में लौटेंगे।

क्रूस पर, अपनी मृत्यु से थोड़ा पहले, उसने एक और वचन कहा। यूनानी में यह एक ही शब्द है। जर्मन में इसके लिए तीन शब्द चाहिए: Es ist vollbracht (पूरा हुआ)।¹² इसका अर्थ यह नहीं है: सब खत्म हो गया। बल्कि: काम हो गया। सौंपा हुआ कार्य पूरा हुआ।

11. मरकुस 14:34-36

12. यूहन्ना 19:30

6 तीन कठिन वाक्य

अब बात कठिन हो जाती है।

तीन वाक्य, जिन्हें आपको धीरे-धीरे पढ़ना होगा।

आप ऐसे वाक्य जानते हैं, जिन्हें दो बार पढ़ना पड़ता है। डॉक्टर की कोई रिपोर्ट। किसी सरकारी दफ्तर का कोई पत्र। आप उन्हें पढ़ते हैं, रख देते हैं और फिर एक बार पढ़ते हैं। क्योंकि उन पर बहुत कुछ निर्भर है।

ऐसे वाक्य यीशु की मृत्यु के बारे में भी हैं। पहले मसीहियों ने उसे कुछ वाक्यों में समेटा। उनमें से तीन विशेष रूप से कठिन हैं। कठिन, क्योंकि वे बहुत भार उठाते हैं। और कठिन, क्योंकि उन्हें आसानी से गलत समझा जाता है।

पहला वाक्य: मसीह पवित्रशास्त्र के अनुसार हमारे पापों के लिए मरा।¹³

यह क्रूस के बारे में सबसे पुराना वाक्य है जो हमारे पास है। पौलुस इसे लगभग 55 ईसवी में कुरिन्थुस के मसीहियों को लिखता है। और वह साथ में कहता है कि उसने स्वयं इसे उन लोगों से प्राप्त किया था, जो उससे पहले मसीही थे। तो यह वाक्य क्रूस के बाद के पहले वर्षों का है। किसी ने इसे पीढ़ियों बाद नहीं गढ़ा।

हमारे पापों के लिए। यह नहीं: उसके शत्रुओं के कारण। यह नहीं: हमारे लिए एक आदर्श के रूप में। बल्कि: **हमारे पापों के लिए।** उसकी मृत्यु का संबंध उससे है, जो अध्याय 2 में लिखा था। उस बीमारी से, जो हमारे भीतर बैठी है। उससे, जिसे हम अब ठीक नहीं कर सकते।

पवित्रशास्त्र के अनुसार। इसका अर्थ है: यह पहले से ही इस्राएल की बाइबल में ऐसे ही लिखा था। पहले मसीहियों ने क्रूस का नया आविष्कार नहीं किया। उन्होंने उसे वहाँ फिर से पाया। सबसे स्पष्ट रूप से एक गीत में, जो उस समय भी सदियों पुराना था। वह परमेश्वर के एक दास की बात करता है, जिसे तुच्छ जाना जाता है, जो दुःख उठाता है, जो मरता है। और वह कहता है:

उसने हमारी बीमारी को उठा लिया। हमारे अपराधों के कारण वह घायल किया गया। यहोवा ने हम सब के दोष का बोझ उस पर डाल दिया।¹⁴

यहाँ जो शब्द है, उसका अर्थ सचमुच बीमारी है। यह “पाप की बीमारी” है। भविष्यद्वक्ता एक ऐसे को देखता है, जो उसे अपने भीतर ले लेता है, जिससे दूसरे बीमार हैं। जैसे बच्चे के बिस्तर के पास डॉक्टर।

इस्राएल की बाइबल की छुटकारे की कहानियाँ आगे क्रूस की ओर संकेत करती हैं। जो वहाँ एक जाति के साथ हुआ, वह यहाँ सब मनुष्यों के लिए होता है।

13. 1 कुरिन्थियों 15:3

14. यशायाह 53:4-6

दूसरा वाक्य: जो पाप से अनजान था, उसे परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।¹⁵

यह तीनों में सबसे कठिन है। आपको इसे टुकड़ा-टुकड़ा करके पढ़ना होगा।

जो पाप से अनजान था: यीशु का अपना कोई दोष नहीं था और उसने कभी अन्याय का साथ नहीं दिया। पाप ठहराया: परमेश्वर ने उसे उस स्थान पर रखा, जहाँ पाप का स्थान है। उसने उसे उसके साथ एक कर दिया, जो हम हैं। यह नहीं: उसने उसे पापी बना दिया। बल्कि: उसने हमारा मामला पूरा का पूरा उसे सौंप दिया। और फिर लक्ष्य: ताकि हम परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। उसमें होकर।

यहाँ धार्मिकता का अर्थ यह नहीं है: त्रुटिहीन होना। इसका अर्थ है: परमेश्वर के साथ सब ठीक होना। फिर से उसके अपने होना।

यह एक अदला-बदली है। उसे हमारा मिलता है। हमें उसका मिलता है। पर यह बाज़ार की अदला-बदली नहीं है, जहाँ दो अजनबी कुछ इधर-उधर सरकाते हैं। यह उसमें होने वाली अदला-बदली है। हमें उसमें ले लिया जाता है। उसकी क्रूस की मृत्यु में। और उसके पुनरुत्थान के जीवन में।

पौलुस एक बार एक मित्र को एक छोटा पत्र लिखता है। उस मित्र का एक दास भाग गया है। उसका नाम उनेसिमुस है। शायद वह कुछ साथ ले गया था। पौलुस उससे परिचित हुआ है और उसे वापस भेजता है। और वह लिखता है: यदि उस पर तेरा कुछ बकाया है, तो उसे मेरे नाम लिख ले। मैं चुकाऊँगा।¹⁶ यहाँ कोई दंड के बारे में नहीं सोचता। एक दूसरे के लिए खड़ा होता है। बाइबल यीशु के बारे में भी ऐसे ही बात करती है।

तीसरा वाक्य: वह हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए काठ पर चढ़ गया।¹⁷

यह वाक्य आप अध्याय 1 से पहले से जानते हैं। यह स्थान बताता है। उसकी देह पर। काठ पर, क्रूस पर। विचारों में नहीं, स्वर्ग में कहीं नहीं। एक निश्चित दिन, एक निश्चित खंभे पर, एक ऐसे शरीर में, जिससे लहू बह सकता था।

और यह कार्य बताता है: उठा लिया। इसके साथ बलिदानों की भाषा का एक और चित्र जुड़ा है। वर्ष में एक बार, प्रायश्चित के बड़े दिन, याजक एक जीवित बकरे के सिर पर अपने दोनों हाथ रखता था। वह उस पर लोगों के सारे दोष का अंगीकार करता था। फिर बकरे को जंगल में भगा दिया जाता था। वह दोष को दूर ले जाता था। एक ऐसे स्थान पर, जहाँ से वह लौटकर नहीं आता था।¹⁸

15. 2 कुरिन्थियों 5:21

16. फिलेमोन 18-19

17. 1 पतरस 2:24

18. लैव्यव्यवस्था 16:21-22

ठीक यही शब्द तीसरे वाक्य में भी है: उठा लिया। उठाकर दूर ले गया। यीशु उस बकरे के समान है, जो दोष को बाहर ले जाता है। और वह साथ ही वह बलिदान है, जिसका लहू शुद्ध करता है। दोनों एक ही व्यक्ति में।

वाक्य आगे भी चलता है: ताकि हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएँ। वहाँ यह नहीं लिखा: ताकि हम बेहतर महसूस करें। वहाँ लिखा है: ताकि हम अलग ढंग से जिएँ। यीशु की मृत्यु केवल कुछ ऐसा नहीं है, जो हमारे लिए हुआ। उसके द्वारा हमारे साथ और हमारे भीतर भी कुछ होना है।

और फिर वह वाक्य आता है, जिसे हम पहले से जानते हैं: उसके घावों से तुम चंगे हुए। उसकी मृत्यु हमारा जीवन है।

7 उसकी मृत्यु हमें कैसे बचाती है

अब एक उत्तर आता है। या कम से कम एक उत्तर का प्रयास।

जिसने किसी को खोया है, वह पूछता है: क्यों? वही क्यों? ऐसे क्यों? अधिकतर कोई उत्तर नहीं मिलता। मृत्यु अर्थहीन बनी रहती है।

यीशु के मामले में हम दूसरे ढंग से पूछते हैं। केवल यह नहीं: वह क्यों मरा? बल्कि: उसकी मृत्यु में क्या हुआ? यह अध्याय 1 का तीसरा प्रश्न है। मैं पाँच कदमों में इसके निकट पहुँचने का प्रयास करता हूँ।

पहला: उसने इसे अपने ऊपर ले लिया।

यीशु किसी दुर्घटना में नहीं फँसा। वह स्वयं उसमें गया। वह जानता था कि यरूशलेम में उसकी क्या प्रतीक्षा कर रहा है। और वह वहाँ गया। अपनी मृत्यु से पहले की रात उसने प्रार्थना की कि यह उससे टल जाए। फिर उसने कहा: जो मैं चाहता हूँ वह नहीं, पर जो तू चाहता है।¹⁹

इसके बाद जो हुआ, वह मनुष्यों ने किया। एक मित्र द्वारा विश्वासघात। एक निर्णय, जो आरंभ से तय था। मार, ठट्ठा, मृत्युदंड। आकाश से कोई बिजली नहीं। मनुष्यों के हाथ। फिर भी बाइबल कहती है: ठीक यही परमेश्वर का मार्ग था। परमेश्वर ने अपने पुत्र को दे दिया।²⁰ दोनों बातें सच हैं। मनुष्यों ने यह किया। परमेश्वर ने इसे होने दिया, क्योंकि वह ऐसा ही चाहता था। क्योंकि इसी तरह वह अकल्पनीय आश्चर्यकर्म होना था, जिसकी बात अध्याय 3 में हुई थी।

यीशु ने वहाँ जो सहा, वह वही है जो तब होता है जब परमेश्वर के बिना एक संसार अपनी राह चलता है। बीज उग आता है। झूठ, अन्याय, हिंसा, मृत्यु। यह दोष और पाप की फ़सल है। उसने उसे अपनी ही देह पर काटा। अपनी फ़सल नहीं। हमारी।

दूसरा: वह इसे उठा सका, क्योंकि यह उसका नहीं था।

यहाँ अध्याय 1 के डॉक्टर का चित्र सहायता करता है। वह बच्चे से बीमारी क्यों ले सका? क्योंकि वह स्वयं उस बीमारी में नहीं था। वह बाहर से स्वस्थ आया। जिस डॉक्टर का स्वयं दम घुट रहा हो, वह किसी बच्चे को साँस नहीं दिला सकता।

यहाँ भी ऐसा ही है। यीशु का अपना कोई दोष नहीं था। कोई शब्द नहीं, जिसे उसे वापस लेना पड़ता। कोई दरवाज़ा नहीं, जिसे उसने ज़ोर से बंद किया हो। इसलिए वह हमारा दोष उठा सका। धर्मी, अधर्मियों के

19. मरकुस 14:36

20. रोमियों 8:32; प्रेरितों के काम 2:23

लिए।²¹ वह उठाता है। वह हमारा दोष अपने ऊपर लेता है। वह पूरी तरह पापियों के पक्ष में खड़ा होता है। यह क्रूस पर होता है। उन घंटों में इसने उसके साथ क्या किया?

तीसरा: उसने इसे अपनी मृत्यु में ले लिया।

मृत्यु ही क्यों होनी थी?

अध्याय 2 को याद कीजिए। पाप केवल दूसरों में या मुझसे बाहर नहीं है। वह मुझ में बैठा है। मेरे जीवन में। पाप, यह घातक बीमारी, जो एक जीवन में बैठी है, तभी समाप्त होती है जब यह जीवन समाप्त होता है। इसलिए उसे किसी बिल की तरह यों ही माफ़ नहीं किया जा सकता। एक बिल को फाड़ा जा सकता है। एक जीवन को नहीं।

यीशु ने हमारे पाप को अपने जीवन में ले लिया। जैसे डॉक्टर ने बच्चे की बीमारी को। और इस जीवन को उसने मृत्यु में दे दिया। दोष और हमारी बीमारी साथ में वहाँ चले गए, जहाँ उनका स्थान है। जैसे वह बकरा पापों को जंगल में, मृत्यु के देश में ले गया था। वहीं वह रह गया।

बाइबल इसे इस कठोर वाक्य से कहती है:

परमेश्वर ने अपने पुत्र के शरीर में पाप को दोषी ठहराया (और उसका न्याय किया)।²²

पुत्र को नहीं। पाप को। उसे उसी स्थान पर अपना दंड मिला, जहाँ वह उसे उठाकर ले गया था। यह अध्याय 3 के प्रश्न का उत्तर है। परमेश्वर अनदेखा नहीं करता। वह पाप का न्याय करता है। और वह पापी को बचाता है। इस प्रकार हमारे लिए उसका मरना जीवन का द्वार बन जाता है।

और लहू? बाइबल में लहू उस जीवन का प्रतीक है, जो दे दिया जाता है। क्रूरता का नहीं। वह कहता है: मैं तुम्हारे लिए अपना जीवन देता हूँ।

पाप की मज़दूरी और परिणाम मृत्यु है। जीवन का कर्ता हमारे स्थान पर मरता है, ताकि हमें स्थायी, अनन्त मृत्यु से बचाए।

चौथा: मृत्यु उसे रोककर न रख सकी।

यहाँ डॉक्टर का चित्र समाप्त होता है। डॉक्टर बीमारी से मर गया, और बात वहीं रह गई। यीशु के साथ बात वहीं नहीं रही। वह स्वयं पूरी तरह भला और धर्मी था। एक ऐसी मृत्यु, जिसमें दूसरों का पाप समाप्त होता है, उसे पकड़े रखने का न कोई अधिकार रखती है, न कोई कारण। तीन दिन बाद कब्र खाली थी। इसके बिना बाकी सब एक सुंदर उदाहरण होता। इसके साथ यह एक उद्धार है। इसी के बारे में अगला अध्याय है।

पाँचवाँ: उसकी मृत्यु हमारी मृत्यु मानी जाती है।

21. 1 पतरस 3:18

22. रोमियों 8:3

अब वह कदम, जो इसे मेरा मामला बनाता है। बाइबल केवल यह नहीं कहती: वह हमारे लिए मरा। वह कहती है: हम उसके साथ मरे।²³ यह कोई धार्मिक मुहावरा नहीं है। इसका अर्थ है: जो उसकी मृत्यु में समाप्त हुआ, वह मेरा बीमार, पापी स्वभाव था। वह मनुष्य, जो मैं था, वहाँ क्रूस पर मरा और उसके साथ कब्र में रखा गया। और जो उसकी कब्र से बाहर आया, वह उसका आरंभ है, जो मुझे बनना है। पुरानी बातें बीत गईं, नई बातें हो गई हैं।²⁴

इसलिए इस मृत्यु के साथ एक छोटा-सा शब्द जुड़ा है, जिसे छोड़ा नहीं जा सकता: साथ। केवल हमारे लिए नहीं। उसके साथ। जो उसे थामे रहता है, उसे साथ ले लिया जाता है। उसकी मृत्यु के भीतर, जहाँ दोष और पाप रह जाते हैं। और बाहर उसके जीवन में, जहाँ वे अब नहीं हैं।

2000 वर्ष पहले की एक घटना में यह संबंध कैसे जुड़ सकता है, यह मैं नहीं कह सकता। यहाँ भी यही लागू होता है: यह परमेश्वर का मार्ग और समाधान है।

इसका क्या अर्थ है।

उस बात के बारे में सोचिए, जिसे आप अब ठीक नहीं कर सकते। मैं आपको इसकी याद इसलिए नहीं दिलाता कि आप बुरा महसूस करें। वह अनहुई नहीं है। कोई यह दावा नहीं करता। पर वह उठाकर दूर ले जाई गई है। एक ऐसे के द्वारा, जो उसे उठा सकता था। एक ऐसे स्थान पर, जहाँ से वह फिर कभी लौटकर नहीं आती।

और आप?

आप अब वह नहीं हैं, जिसमें वह बैठी है। आप उसके साथ मृत्यु से होकर गुज़रे हैं। यह कोई भावना नहीं है। यह एक तथ्य है, जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया है। आप परमेश्वर के इस सत्य पर खड़े हो सकते हैं।

क्या कुछ बचा रहता है, जिसे मैं समझा नहीं सकता? हाँ। एक जीवन मृत्यु से होकर दूसरे जीवन को कैसे साथ ले जा सकता है, यह एक भेद बना रहता है। यीशु के लिए अपने अंतरतम में इसका क्या अर्थ था, यह भी। पर यह एक ऐसा भेद है, जिसकी एक तिथि है, एक स्थान है और एक खाली कब्र है।

इस स्थान पर मैं केवल इतना कह सकता हूँ: धन्यवाद, यीशु, धन्यवाद!

23. रोमियों 6:4; 2 कुरिन्थियों 5:14

24. 2 कुरिन्थियों 5:17

8 ईस्टर क्यों इसका हिस्सा है

शुक्रवार को वह मर गया।

रविवार को कब्र खाली थी।

जो कभी किसी कब्र के पास खड़ा हुआ है, वह इस भावना को जानता है। यहाँ कुछ समाप्त हो गया है। हमेशा के लिए। आप फूल ला सकते हैं और मोमबत्तियाँ जला सकते हैं। पर अंतिम शब्द मृत्यु का है। कम से कम ऐसा ही लगता है।

कल्पना कीजिए कि यीशु की कहानी शुक्रवार को ही समाप्त हो गई होती। एक भला मनुष्य, जिसे मृत्युदंड दिया गया। उसके मित्र छिपे हुए, इस डर से कि अगली बारी उनकी है। उसकी कब्र एक भारी पत्थर से बंद और पहरों में।

तब हमारे पास एक मार्मिक उदाहरण होता। एक व्यक्ति, जो अपने विश्वास के लिए मरा। एक व्यक्ति, जिसने क्रूस पर भी अपने मारनेवालों के लिए प्रार्थना की। उसकी प्रशंसा की जा सकती थी। उसके जैसा बनने की कोशिश की जा सकती थी। पर किसी का उद्धार न होता। वह अध्याय 1 के उस डॉक्टर जैसा होता: उसने बीमारी को अपने भीतर ले लिया, और बीमारी ने उसे मार डाला।

पौलुस यह बात बिना किसी लाग-लपेट के कहता है:

यदि मसीह जिलाया नहीं गया, तो तुम अब तक अपने पापों में हो।²⁵

अब तक अपने पापों में। तब कब्र वह जगह न होती जहाँ दोष रह गया। वह केवल वह जगह होती जहाँ वह भी रह गया। तब इस पुस्तक में लिखी हर बात व्यर्थ होती।

पहले मसीही एक अनसुनी बात का दावा करते हैं। वह मरा हुआ नहीं रहा। तीसरे दिन कब्र खाली थी। स्त्रियों ने उसे ऐसा ही पाया, भोर के समय। और वह अपने मित्रों से मिला। किसी आत्मा के रूप में नहीं। ऐसे व्यक्ति के रूप में, जो उनके साथ खाता है और जिसके घावों को छुआ जा सकता है।

यदि यह सच है, तो क्या? तब हमारे प्रश्न के लिए इसका कम से कम तीन बातों में अर्थ है।

पहली: परमेश्वर ने हाँ कहा। उस बात को हाँ, जो शुक्रवार को हुई। यदि परमेश्वर उसे जिलाता है, तो उसकी मृत्यु कोई दुर्घटना नहीं थी जिसे परमेश्वर ने बाद में सुधार दिया। तब यह सब ही मार्ग था, और परमेश्वर ने उस पर मुहर लगा दी। एक पुराना वाक्य दोनों बातें एक ही साँस में कहता है: वह हमारे अपराधों

25. 1 कुरिन्थियों 15:17

के कारण पकड़वाया गया और जिलाया भी गया, ताकि हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरें।²⁶ मृत्यु दोष को हटा देती है। पुनरुत्थान कहता है: यह सदा के लिए मान्य है।

दूसरी: दोष कब्र में रह गया। वह नहीं। यही इस बात का चिह्न है कि दोष अब है ही नहीं। यदि अब भी कुछ बाकी होता, तो मृत्यु को उसे अपने पास रखने का अधिकार होता।

एक छोटी-सी स्पष्टता: “दोष कब्र में रह गया” एक चित्र है। इसका अर्थ है: वह निपट गया, हटा दिया गया, अब नहीं है।

तीसरी: वह जीवित है। जो हमारे लिए मरा, वह बीते हुए समय की बात नहीं है। वह यहाँ है। आज। सदा के लिए। वह एक मानवीय, अमर पुनरुत्थान-देह के साथ परमेश्वर के पास गया है। वहीं से वह फिर आएगा।

वैसे, डिथीरिया की कहानी आगे भी चली। उन्नीसवीं सदी के अंत में उसकी एक दवा मिल गई। उसे घोड़ों के लहू से प्राप्त किया गया। उन्हें बीमारी का विष दिया गया था, पहले थोड़ा, फिर अधिक। उन्होंने उस पर विजय पा ली थी। और अब उनके लहू में वह था जिसने बच्चों को बचाया। इस तरह हज़ारों बच्चे जीवित बचे।

हर चित्र कहीं न कहीं अधूरा रहता है, यह भी। फिर भी यह कुछ दिखाता है। जिसने बीमारी को झेला और उस पर विजय पाई, उसका जीवन दूसरों को चंगा कर सकता है। यीशु ने संसार की बीमारी को अपने भीतर ले लिया और मृत्यु पर विजय पाई। उसका जीवन अब हमारे लिए है। बाइबल कहती है:

हम उसके जीवन के द्वारा उद्धार पाएँगे।²⁷

बुराई अभी भी है। बीमारी भी, और मृत्यु भी। पर दवा मिल गई है। उनका अंत तय है।

26. रोमियों 4:25

27. रोमियों 5:10

9 शुभ संदेश

और मैं?

मुझे इससे क्या मिलता है?

आपने यह पुस्तक यहाँ तक पढ़ी है। शायद जिज्ञासा से। शायद संदेह के साथ। शायद दोनों के साथ। यह अध्याय 1 का अंतिम प्रश्न है: यह मुझ तक कैसे पहुँचता है? दो हज़ार वर्ष पहले एक मनुष्य मरा और जी उठा। मेरा इससे क्या लेना-देना?

कुछ नहीं, जब तक मैं केवल देखता रहूँ। सब कुछ, जैसे ही मैं अपने आपको उसके हाथों में सौंप दूँ।

कल्पना कीजिए एक ऐसे मनुष्य की, जो गंभीर रूप से बीमार है और साथ ही अदालत में अभियुक्त के रूप में खड़ा है। उसे दो चीज़ों की कमी है: बरी होने की और स्वास्थ्य की। उसे बरी किया जा सकता है, और वह बीमार ही रहता है। उसे चंगा किया जा सकता है, और वह अभियुक्त ही रहता है। उसे दोनों की ज़रूरत है।

हमारी स्थिति ऐसी ही है। यह हमने अध्याय 2 में देखा। हमें क्षमा चाहिए। और हमें उस बीमारी का अंत चाहिए, जो हमारे भीतर बैठी है। क्रूस, या बेहतर कहें: क्रूस पर चढ़ाया गया, दोनों देता है। पर किसी मशीन की तरह नहीं, जिसमें सिक्का डाला जाता है। वह इसे एक डॉक्टर की तरह देता है, जो बिस्तर के पास आता है। इसके लिए मुलाकात ज़रूरी है।

बीमार को क्या करना है? अध्याय 1 के उस बच्चे के बारे में सोचिए। वह कुछ नहीं कर सकता था, सिवाय इसके कि वह शांत रहे और डॉक्टर को अपना काम करने दे। उसे यह समझना ज़रूरी नहीं था कि डॉक्टर क्या कर रहा है। उसे बस उसे करने देना था।

बाइबल में इसके लिए एक शब्द है: विश्वास करना। यह शब्द घिस गया है। बहुत लोग इसमें यह सुनते हैं: किसी ऐसी बात को सच मानना, जिसे सिद्ध नहीं किया जा सकता। पर इसका अर्थ कुछ और है। विश्वास करने का अर्थ है: उस पर भरोसा रखना। अपने आपको ऐसे व्यक्ति को सौंप देना, जो सहायता कर सकता है। आपको सब कुछ समझना ज़रूरी नहीं है। केवल और सबसे पहले यह: वही है जो क्षमा करता है, चंगा करता है और उद्धार देता है। आपको उसे अपने पास आने देना है। उसके लिए अपने आपको खोलना और उसे भीतर आने देना है।

और फिर क्या होता है? एक वाक्य इसे ऐसे कहता है:

इसलिए जब हम विश्वास से धर्मी ठहराए गए, तो परमेश्वर के साथ हमारा मेल है।²⁸

28. रोमियों 5:1

धर्मी ठहराए गए, यह है बरी होना। और मेल, शान्ति। कोई युद्धविराम नहीं, जिसमें हर पक्ष इंतज़ार करता है कि कहीं दूसरा फिर से शुरू न कर दे। शान्ति। बात निपट गई है। इसलिए नहीं कि मैंने उसे निपटाया। बल्कि इसलिए कि उसने उसे अपनी देह पर क्रूस के काठ तक उठा लिया।

इसके साथ तीन बातें जुड़ी हैं। यह कोई दबाव नहीं है। यह एक निमंत्रण है।

मन फिराना। इसका अर्थ यह नहीं है: पहले अच्छे बनो, फिर आओ। इसका अर्थ है: दिशा बदलना। अपने आपको स्वयं चंगा करने की कोशिश छोड़ देना। यह मान लेना कि ऐसा नहीं हो सकता। मन फिराना वही है जिसे पुराने शब्दों में पश्चाताप कहा जाता है।

बपतिस्मा लेना। बपतिस्मा एक चिह्न है, जो पूरे शरीर के साथ होता है। मनुष्य को पानी में डुबोया जाता है और वह फिर ऊपर आता है। बाइबल कहती है: हम उसके साथ गाड़े गए।²⁹ जो मनुष्य मैं था, वह वहाँ रख दिया जाता है जहाँ दोष रह गया। और जो बाहर आता है, वह उसका है जो जीवित है। बपतिस्मा के द्वारा मनुष्य एक नए प्रभु को, राजा यीशु को, अंगीकार करता है।

उसका हिस्सा बनना। कोई भी यह मार्ग अकेले नहीं चलता। जो यीशु का है, वह बहुत-से दूसरों के साथ एक संगति का हिस्सा है। आपको दूसरों की ज़रूरत है। और दूसरों को आपकी ज़रूरत है।

और अब अंत। यह अंत नहीं है, यह एक आरंभ है। जिस वाक्य से सब शुरू हुआ था, वह था: वह हमारे लिए मरा। अब आप जानते हैं कि मसीही इससे क्या मतलब रखते हैं। उसने हमारे दोष को अपने भीतर ले लिया, क्योंकि वह उसका नहीं था। उसने उसे अपनी देह पर अपनी मृत्यु में उठा लिया। उसने हमें भी उसमें साथ ले लिया और साथ ही बाहर निकाल लाया। और वह जीवित है।

कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हें आप अब सुधार नहीं सकते। यह सच बना रहता है। पर एक है जिसने उन्हें उठा लिया। यही शुभ संदेश है। बाइबल इसे सुसमाचार कहती है। मैं विश्वास करता हूँ: यह सच है। और यह आपके लिए है।

29. रोमियों 6:4



**दो हज़ार वर्ष पहले एक मनुष्य को मृत्युदंड दिया जाता है।
उसके मित्र बाद में कहते हैं: वह हमारे लिए था।**

इसका क्या अर्थ है? क्या कोई दूसरों के लिए मर सकता है? और इसका मुझसे क्या लेना-देना है?

यह पुस्तक इस प्रश्न की अंत तक खोज करती है। यह बताती है कि हमारे साथ क्या ठीक नहीं है, परमेश्वर वास्तव में कैसा है और एक मृत्यु क्यों कुछ बदल सकती है।

क्रूस एक चिह्न से बढ़कर है। यह अनन्त जीवन में जाने का मार्ग है।

उन सबके लिए, जो सचमुच जानना चाहते हैं।